अरूण साव
उप मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
लोक निर्माण, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी,
नगरीय प्रशासन एवं विकास,
खेलकूद एवं युवा कल्याण विभाग

कार्यालय : कक्ष क्र. एम 4–09, महानदी भवन, मंत्रालय, नवा रायपुर अटल नगर जिला– रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : 0771–2221318, 2221319
निवास कार्यालय : एम–6, सेक्टर–24, नवा रायपुर अटल नगर, जिला– रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : 0771–2965091, 2965092

पत्र क्र. 659

नवा रायपुर अटल नगर, दिनांक : 14/02/26

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि परंपरागत त्यौहार होली के पावन पर्व पर "दुलत्ती पत्रिका" का प्रकाशन 50वें वर्ष में किया जा रहा है । यह स्वर्णिम अवसर प्रकाशन परिवार के समर्पण, परिश्रम और सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचायक है ।

इस पत्रिका के माध्यम से आपसी भाईचारे, एकता और सौहार्द की भावना को सुदृढ किया जाता है । साथ ही समाज में व्याप्त विसगतियों के प्रति जनसामान्य को जागरूक कर सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में प्रेरित किया जाता हैँ मनोरंज के साथ ही सामाजिक चेतना और जनविकास के क्षेत्र में यह पत्रिका निरंतर अद्भूत एवं उल्लेखनीय योगदान देती रही है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु इस पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, उसमें यह निश्चित रूप से सफल होगी और समाज को नई दिशा प्रदान करेगी ।

50वें वर्ष के सफल एवं सार्थिक प्रकाशन पर मैं आपको, समस्त पाठकों एवं प्रकाशन परिवार को रंगो के त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा उज्जवल भविष्य की मंगलकामनाएँ देता हूँ

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई

प्रति,

श्री मनोज अग्रवाल
संपादक
होली पत्रिका दुलत्ती
सदर बाजार मुंगेली (छ.ग.)

अरूण साव

स्थापना दिनांक 11/01/1961
पंजीयन क्रमांक 2ब/113/65(4)63-64

ॐ

भवानी साव रामलाल साव धर्मादा ट्रस्ट

(छ.ग.सार्वजनिक न्यास कानून 1051 के अंतर्गत पंजीकृत)
गांधी वार्ड, मुंगेली - 495334

डॉ.विनय गुप्ता
चेयरमेन/मैनेजिंग ट्रस्टी

डॉ.विनय गुप्ता
वरिष्ठ चिकित्सक एवं
अध्यक्ष बी.आर.साव धर्मादा ट्रस्ट मुंगेली, जिला मुंगेली
मो.9754275203

शुभ संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि मुंगेली में होली की हास्य पत्रिका दुलत्ती का प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे होने जा रहा है।

इस अवसर पर प्रकाशित दुलत्ती पत्रिका के प्रकाशन करने के लिए मैं कोटिश: बधाई देता हूँ तथा शुभ कामनाएँ व्यक्त करता हूँ कि सभी वरिष्ठ जन स्वस्थ्य, सुखी और दीर्घायु हों।

धन्यवाद सहित

सबका शुभेच्छु
डॉ. विनय गुप्ता
वरिष्ठ चिकित्सक एवं
अध्यक्ष बी.आर.साव धर्मादा ट्रस्ट जिला मुंगेली

अध्यक्ष
भवानी साव रामलाल साव
धर्मादा ट्रस्ट मुंगेली (छ.ग.)

ट्रस्ट द्वारा संचालित संस्थाएं (1) भवानी साव रामलाल साव धर्मशाला मुंगेली (2) केशरवानी छात्रावास मुंगेली
(3) श्रीमती रम्भाबाई रामलाल साव धर्मादा वाचनालय मुंगेली
ट्रस्ट द्वारा दान की संस्थाएं (1) बी.आर.साव शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला मुंगेली
(2) श्रीमती रम्भाबाई रामलाल साव शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला मुंगेली
(3) भवानी साव रामलाल साव कृषि अभियांत्रिकीय एवं प्रौद्योगिक महाविद्यालय (चलान) मुंगेली

पुन्नूलाल मोहले
विधायक, मुंगेली

शुभकामना संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि रंगों के त्यौहार होली के पावन पर्व पर दुलत्ती पत्रिका के प्रकाशन के 50 वर्ष पूर्ण हो गये हैं।

इस पत्रिका के माध्यम से सुरुचिपूर्ण हास्य व्यंग की स्वस्थ भावना को बढ़ाया गया है।

दुलत्ती के प्रकाशन पर मैं दुलत्ती परिवार एवं सभी मुंगेली वासियों को रंगों के त्यौहार होली की बधाई व शुभकामनाएं देता हूं।

आपका
पुन्नूलाल मोहले
विधायक, मुंगेली

हमारी बात-

दुलत्ती अब 50 वें वर्ष में पहुंच गया है 2026 का य ह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अच्छा लग रहा है। हर साल आपको दुलत्ती जमाने की इच्छा को कई बार मन में ही रखना पड़ता है। जिसका परिणाम यह होता है कि गाहे-बगाहे आप लोगों की शिकायत रूपी दुलत्ती हमको पडते रहती है। आपने जो दुलत्ती हमको जमाई उसी के परिणामस्वरूप हमारी दुलत्ती इस साल भी आपके हाथों में है। आशा है इसकी सामग्री आपको हंसी-मजाक-चुटकियों के विभिन्न रंगों में डुबाकर होली के रंग में सराबोर करने में सक्षम होगी।

हमारे अक्कल के अनुसार मुंगेली में दुलत्ती खाने के योग्य जितने सज्जन (?) हैं, उन सभी का समावेश दुलत्ती पत्रिका में हमने किया है। संभव है इसमें अनेक ऐसे लोगों का नाम छूट गया हो जो इस मैरिट सूची के योग्य अपने आप को समझते हों। हमें उनकी योग्यता पर कोई शक नहीं है। हम यह मानकर चलते हैं कि इनकी योग्यता को परखने के बारे में हमारी ही समझदानी कुछ कमजोर हो सकती है। ऐसे छूटे जनों से हम पैर जोड़कर मुआफी चाहते हैं। अगले वर्ष भी अगर दुलत्ती प्रकाशित हुई तो हमारी कोशिश रहेगी कि हम ऐसे सभी परे-डरे मनखे लोगों पर सामग्री दुलत्ती में दे सकें।

दुलत्ती में प्रकाशित सामग्री विशुद्ध मनोरंजन के लिए है। कपया इसे इसी भाव से पढकर आनंद उठावें। हमारा उददेश्य किसी को भी रंचमात्र ठेस पहुंचाना नहीं है।

सन 2026 का वर्ष मुंगेली के लिए नये कर्णधारों के साथ नई उम्मीदें, विकास की नई चेतना और विश्वास लेकर आया है। जिला में इस बार होली का त्यौहार पूरे हर्षोल्लास के साथ हर नागरिक मनाएंगे, इसी विश्वास के साथ हमने भी रंगों के इस त्यौहार में दुलत्ती पत्रिका के माध्यम से रंग-गुलाल बिखरने का प्रयास किया है। कम पृष्ठों की ही सही मगर हमें विश्वास है कि दुलत्ती आपको पसंद आएगी।

दुलत्ती के प्रकाशन में जिन-जिन का हमें सहयोग मिला। हम उन सबके आभारी है। और आशा करते हैं कि भविष्य में भी इनका सहयोग मिलता रहेगा।

अभी कुछ दिन पहले की ताजा–ताजा बात है। देर रात तक अपने आसपास उपस्थित पार्टी जनों से चर्चा करने के बाद उपमुख्यमंत्री अरुण साव अपने शयन कक्ष में विश्राम करने पहुंचे। लेटायमान होने के बाद वे देखते हैं कि उनकी मच्छरदानी के अन्दर एक मच्छर आ गया..... अभागा !! साव ने सवाल दागा – तुम कौन हो ?? मच्छर ने कहा– मैं मच्छर हूँ, खून चूसता हूँ, बीमारी फैलाता हूँ, साव ने कहा – सीधे–सीधे क्यों नहीं कहते, नेता प्रजाति के हो, लोगों को मूर्ख बनाते हो, खून चूस के जाते हो ?

मच्छर धीरे से मुस्काया, बोला– हम तो बस आप लोगो पर निर्भर हैं , आप लोग तो हमसे भी बड़े हुनरमंद हैं, साव ने पूछा– कैसे ?

मच्छर बोला– हमको भगवान ने बनाया, उनको आपने, पहले आप उनको बनाते है फिर उन्ही से बनते हैं हम तो बस खून चूसते हैं, मगर आप लोग तो.....

साव ने कहा की हमसे तो महान अफसर लोग होते हैं।

हमको भी वो नहीं छोड़ते। तुम तो उन्हीं को चूसो, जो हमको चूसते हैं,

मच्छर ने कहा– उनको चूस के हम कहा जी पायेंगे, वो लोग डीडीटी और फागिंग मशीन नहीं चलवाते, इसीलिए तो हम जी पाते हैं। अगर अफसरों को गुस्सा आ गया तो क्या आप हमें बचायेंगे? आपका चूस सकते है, आप तो खास है. उनका नहीं, जो चूसने में हमारे भी बाप है!!

कुछ साल पहले तक गिरीश शुक्ला को गैस की भारी बीमारी थी। वो बहुत परेशान थे, ना कही आते बनता था ना कही जाते। जिला भाजपा कार्यालय भी जाते तो एक दिन उन्हें जल्द घर आना पड़ा। घर जाते समय रास्ते मे सोचने लगे कि अपने पोते आदि के लिए क्या लेके जाऊँ?

फिर एक दुकान से क्रीम वाला बिस्किट ले लिया, घर पहुँचते ही पोते ने देखा तो दादाजी आ गये, दादाजी आ गये करते हुए पास आया। गिरीश जी जेब से बिस्किट निकालकर जैसे ही उसे देने के लिए झुके जोर की आवाज के साथ गैस निकल गयी। अब तो हुई मुसीबत। पोता आदि बिस्किट फेँककर जमीन पर लेटकर रोने लगा। गिरीश ने उसे उठाकर पुछा, क्या हुआ क्यों रो रहे हो?

तो आदि और जोर से रोने लगा। गिरीश ने उसे गोद मे लेकर प्यार से पुछा, क्या चाहिए आदि, क्यों रोते हो?

आदि रोते रोते बोला, हमको ये वाला बिस्किट नही चाहिए, वो सीटी वाला चाहिए जो आपने अभी अभी झुककर बजायी है।

एक रात भाजपा के युवा नेता आशीष मिश्रा
ने एक बूढी औरत की मदद की
और उसको उसके घर तक पहुंचाया.
बुढिया बोली,– बेटा रात ज्यादा हो गई है तुम ऐसा करो यहीं सो जाओ, बिट्टू के रुम में।
आशीष – नहीं दादी जी, मैं यहीं हॉल में सो जाऊंगा। तीन–चार बार आग्रह करने के बाद भी आशीष नहीं माना तो वह बुढिया बोली– ठीक है जैसी तुम्हारी इच्छा. सुबह एक खूबसूरत लडकी चाय लाई।
उसे देख आशीष बोला– आप कौन?
लडकी बोली, मैं बिट्टू, और आप?
आषीश बोला– मैं गधा, उल्लू का पट्ठा।

कुछ साल पहले की बात है । एक दिन संजय वर्मा का बेटा स्वप्निल वर्मा ने कहां– पापा, पांच सौ रुपए दो ना।
संजय– नहीं दूंगा।
बेटा – पापा, दे दो ना। दूधवाले और मम्मी की एक बात बताऊंगा।
संजय– यह ले एक हजार रुपए, जल्दी बता।
बेटा – मम्मी, दूधवाले से बोल रही थी कि तुम आजकल दूध में बहुत पानी मिलाने लगे हो। दूध अच्छा लाया करो। नहीं तो तुमसे दूध लेना बंद कर देंगे।

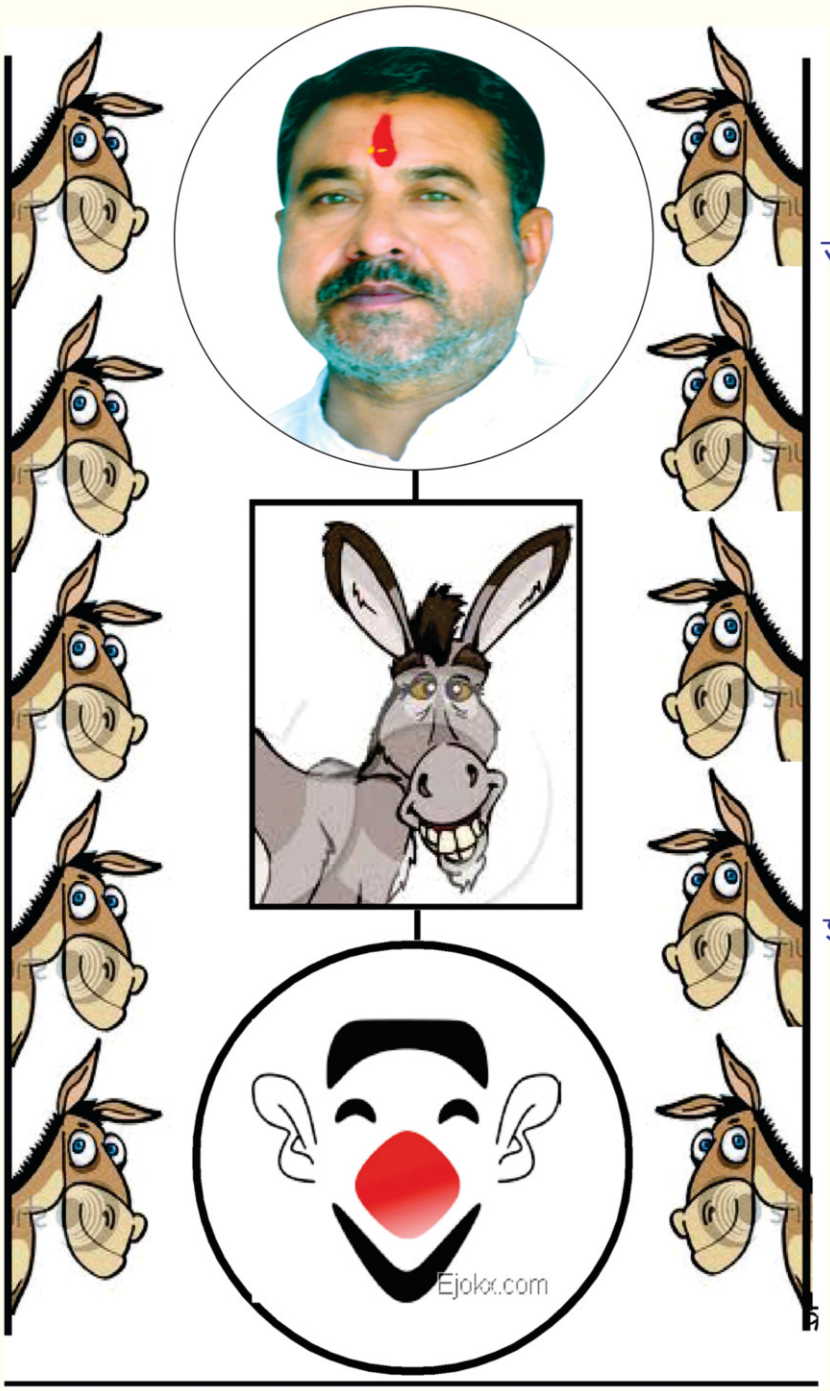

अनिल सोनी करही स्थित अपने घर में अपने पालतू गधे को नहला रहे थे । पानी डाल घिस–घिस कर नहला रहे थे । तभी उनके संगी झम्मन साहू वहां पर पहुंचे । अनिल भाई के इस सेवा भाव पर प्रफुल्लित होकर उसने कहा अनिल भाई, ऐसा लगता है कि आज आपके गधे की शादी है । अनिल बोला–हॉ आज इसकी शादी है । आप सही फरमाते है शादी में हम आपको भी बुलाते है । झम्मन ने पूछा अच्छा तो दावत में क्या–क्या खिलाओगे अनिल ने हल्की सी मुस्कान फेंककर कहा जो दुल्हा खायेगा वो तुम भी खा लेना ।

छ.ग.राईस मिल संघ की ओर से उपलेटा राईस मिल के संचालक युसुफ उपलेटा को विदेश यात्रा पर जाना था यात्रा की तैयारियों के सिलसिले में घर के सामने खाली जगह पर युसुफ गड्ढा खुदवा रहा था। पड़ोसियों को लगा कि युसुफ भाई जनता सेवा के लिए कुंआ खुदवा रहे हैं।

एक पड़ोसी ने पूछ ही लिया- युसुफ जी, ये कुंआ किसलिए खोदा जा रहा है?,
युसुफ -ओ !..कुछ नहीं, दरअसल मुझे विदेश जाना है ना...इसलिए,
पड़ोसी-विदेश जाने के लिए कुंआ खोदना जरूरी होता है क्या?,
युसुफ-ओ !..कर दी ना तूने गधों वाली बात बेवकूफ पॉसपोर्ट बनवाने के लिए फोटो चाहिए होती है कि नहीं?,
पड़ोसी- फोटो तो चाहिए होती है लेकिन...फोटो से कुंआ का क्या कनेक्शन है?,
युसुफ-अरे बेवकूफ ! ये कुंआ नहीं गड्ढा है, पॉसपोर्ट वाले फोटो में कमर के ऊपर का हिस्सा आना चाहिए... इसलिए कमर तक गहरे खड्डे खोदवा रहा हूं, ताकि नीचे का हिस्सा कैमरे में न आए,
पड़ोसी - ओह....लेकिन यहां तो आप आलरेडी तीन गड्ढे खुदवा चुके हो...फिर ये चौथा क्यों?
युसुफ - कैसे कैसे जाहिल लोगों से पाला पडा है।
अरे यार , पॉसपोर्ट में चार फोटो लगानी पड़ती है... ! इतना भी नहीं जानता।

विधायक पुन्नूलाल मोहले को गर्म हवा के गुब्बारे में घूमने का शौक चर्राया। बड़ी मुश्किल से एक गर्म हवा वाले गुब्बारे की बंदोबस्त की गयी। और नेताजी गुब्बारे में निकल लिए। कुछ समय बाद उन्हें अहसास हुआ कि वे खो गए हैं। उन्होंने उंचाई थोड़ी कम की और नीचे एक व्यक्ति को देखा। वे कुछ और नीचे आए तथा चीख कर कहा, मैं भटक गया हूं। क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं। मुझे घंटे भर पहले ही एक मीटिंग में पहुंचना था। पर मुझे यह भी नहीं समझ में आ रहा है कि मैं कहां हूं। नीचे वाले व्यक्ति ने जवाब दिया, आप गर्म हवा के गुब्बारे में हैं, जमीन से करीब 30 फीट की उंचाई पर हैं। आप 40 व 41 डिग्री नॉर्थ लैटीट्यूड तथा 59 और 60 डिग्री वेस्ट लैटीट्यूड के बीच हैं। गुब्बारे में लटके मोहलेजी ने मन ही मन नीचे खड़े व्यक्ति को भर पेट गरियाया और कहा, क्यों भाई इंजीनियर हो क्या...? जो अपनी काबिलियत दिखा रहे हो। नीचे वाले व्यक्ति ने कहा, सही पकड़े हैं। जी हां, हम जिला पंचायत मुंगेली में इंजीनियर हूं। पर आपको कैसे पता चला? मोहले जी ने कहा, आपने जो कुछ मुझे कहा वह तकनीकी तौर पर सही है। पर आपकी यह सूचना मेरे किसी काम की नहीं है। और तथ्य यह है कि मैं अभी भी खोया हुआ हूं। सच कहूं तो आपसे मुझे कोई सहायता नहीं मिली। उल्टे आपने मेरा समय खराब किया। नीचे वाले इंजीनियर ने पूछा, आप नेता हैं क्या? हां मैं नेता ही हूं। पर आपको कैसे पता चला? गुब्बारे में लटके मोहले ने पूछा। इंजीनियर ने कहा, आपको पता नहीं है कि आप कहां हैं या कहां जा रहे हैं। आपको मीटिंग में जाना था पर गुब्बारे में घूमने निकल गए। आपको कुछ पता नहीं है कि मीटिंग में पहुंचने के लिए क्या करना है और आप अपने नीचे वाले से उम्मीद कर रहे हैं कि आपको इस संकट से निकाल दे। आप जरूर नेता ही होंगे।

पत्रकार प्रशांत शर्मा रिपोर्टिंग की व्यस्तता से थका हारा पूरा दिन काम करने के बाद मुंगेली से लोरमी लौट रहा था.....रास्ते में अचानक उसकी गाड़ी खराब हो गयी...
रात काफी थी..एकदम घना अंधेरा था...घुप्प
मोबाइल का नेटवर्क भी नहीं था आस पास....उसकी हालत बिलकुल खराब...
ना कोई आगे ना दूर दूर तक पीछे ...एकदम सन्नाटा और खामोशी.....
अब उसने कोई उपाय न देख मजबूर होकर अपनी गाड़ी साइड में लगा दी और लिफ्ट के लिए किसी दूसरी गाड़ी के आने का इंतजार करने लगा...
काफी देर इंतजार के बाद उसने देखा कि एक गाड़ी बहुत धीमे धीमे उसकी ओर बढ़ रही थी बिलकुल आहिस्ता आहिस्ता.....उसे आते देख प्रशांत जान में जान आयी और वो मन ही मन खुश हो गया.....उसने गाड़ी रोकने के लिये हाथ दिया लेकिन कुछ सुगबुगाहट नहीं हुई... ...
गाड़ी धीरे धीरे रूक रूक कर उसके पास आयी...प्रशांत ने गेट खोला और झट से उसमें बैठ गया। लेकिन अंदर बैठने के बाद उसके होश ही उड़ गये...गला सूखने लगा...आँखे खुली की खुली रह गयी छाती धड़कने लगी... धक धक धक धक.....उसने देखा कि ड्राइविंग सीट पर कोई नहीं है...फिर भी गाड़ी अपने आप चल रही है एक तो रात का अंधेरा ...ऊपर से यह खौफनाक दृश्य ...उसको समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करूँ ..बाहर निकल जाऊँ कि अंदर ही रहूँ ...वो कोई फैसला कर पाता कि तभी अचानक सामने रास्ते पर एक मोड़ आ गया ...तभी दो हाथ साइड से आये और स्टेयरिंग घुमा दिया और गाड़ी मुड़ गयी ...और फिर झट से दोनों हाथ गायब ...अब तो उसकी सिट्टी पिट्टी पूरी गुम हो गयी...भूत,प्रेत,पिशाच,चुड़ैल और किसी खतरनाक डायन के भय से उसने झट से मन ही मन हनुमान चालीसा पढ़ना शुरू कर दिया...और फिर अंदर चुपचाप छिप कर रहने में ही अपनी भलाई समझी .गाड़ी धीरे धीरे.....रूक रूक कर आगे बढती रही... बढ़ती रही....निरंतर बढ़ती रही.....बढ़ती रही.....
तभी उसे सामने एक पेट्रोल पंप नजर आया ...गाड़ी वहाँ जाकर रूक गयी .. प्रशांत ने राहत की साँस ली और तुरंत गाड़ी से उतर गया ..वहीं पर पानी पिया और एक बहुत लंबी सांस ली.....
इतने में उसने देखा कि नवभारत अखबार के ब्यूरो प्रमुख, उसके साथी योगेश शर्मा गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर बैठने के लिये जा रहा है...वह दौड़ते हुए उसके पास पहुंचा और उससे कहा रुको रुको..योगेश, इस गाड़ी में बिलकुल मत बैठो ...मैं इसी में बैठकर आया हूँ इसमें बहुत खतरनाक भूत या प्रेत है जो दिखता भी नहीं है लेकिन गाड़ी अपने आप चलती है
योगेश ने प्रशांत के गाल पर झन्नाटेदार झापड़ मारा और कहा. अबे... तू बैठा कब इसमें? ...तभी मैं सोचूँ साला गाड़ी एकदम से अचानक इतनी भारी कैसी हो गयी यह मेरी ही गाड़ी है...पेट्रोल बीच रास्ते खतम हो गया था इसलिए पाँच कि.मी. से धक्का मारते हुये ला रहा हूँ !

सुनील पाठक- आज से पहले तक मैं यह समझता था कि दुनिया में मैं ही उल्लू हूं।

कोटूमल-क्यों क्या हुआ? अचानक यह ज्ञान कैसे हुआ

सुनील - एक सप्ताह पहले मैने अपने बेटे को कश्मीरी सेब लाने को कहा था।

कोटूमल - तो क्या हुआ? नहीं मिला क्या

सुनील - आज कश्मीर से बेटे का फोन आया कि उसने 5 किलो सेब खरीद लिए है।

नये नये पार्षद पति बने मकबूल खान प्रियंका चोपड़ा की एक भी फिल्म देखना नहीं भूलते हैं। अगर उसका बस चले तो वह कब से प्रियंका के साथ घर बसा लेते, मगर क्या करें मजबूरी है। आखिरकार बहुत सोच विचारकर उसने प्रियंका को भावुकता से भरा पत्र लिखा- मैं आपको अपनी बहन बनाना चाहता हूं। अगर आप इजाजत दें तो?

प्रियंका को भला क्या ऐतराज होता। उसने जवाबी पत्र में लिखा- प्यारे सरपंच भैया, देश की इतनी अनजानी सी जगह से आप सरीखा पला-पलाया भाई पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। आपको अपना एक चित्र भेज रही हूं। कभी मुम्बई आएं तो जरूर मिलें। आपकी बहन- प्रियंका चोपड़ा

पत्र को पाकर अजीत को अत्यंत प्रसन्नता हुई। मगर उसकी मां पत्र देखकर बेहद नाराज होकर चिल्लाने लगी- कमबख्त, सभी को बहन बनाता फिरता है तो फिर शादी काहे को किया।

कांग्रेस नेता संजीत बनर्जी नाई की दुकान पर दाढ़ी बनवाने गया. जब नाई उसके चेहरे पर ब्रश से बढिया क्रीम से उतनी ही बढिया झाग बना रहा था तो उसने अपने चेहरे के थोड़े से पिचके गालों की ओर इशारा करते हुए बोला मेरे गालों के इस गड्ढे के कारण दाढ़ी ठीक नहीं बन पाती और कुछ बाल छूट जाते हैं. कोई बात नहीं नाई आगे बोला मेरे पास इसका इलाज है. उसने पास के दराज में से लकड़ी की एक गोली निकाली और उसे देते हुए बोला इसे अपने मुंह में मसूढ़ों और गाल के बीच रख लो. संजीत ने वह गोली मुँह में रख ली जिससे उसका गाल फूल गया और नाई ने उसकी शानदार, बढिया दाढ़ी बनाई. यदि यह गोली गलती से पेट में चला जाए तो? संजीत ने कठिनाई से बोलते हुए पूछा. गोली उसके मुँह में ही फंसी थी. कोई बात नहीं, नाई बोला – कल लेते आना. जैसे कि बहुत से लोग अब तक लेते आए हैं।

पत्रकार सुशील शुक्ला रोज इधर उधर भटकने के लिए पत्रकार जय कुमार को उसके घर से लेते थे। कुछ दिनों से जय कुमार ने अपने बोलने वाले चटरहा किस्म के पोसवा तोता को घर के दरवाजे पर टांग रखा था। रोज–रोज सुशील को आते देख तोता अकबका गया था। एक दिन, तोते ने सुशील को देखा और बोला– ओ पत्रकार महोदय! सुशील ने हैरानी से उसकी तरफ देखा, और बोला– हां बोलो, क्या है? तोता बोला– तुम तो बहुत ही गुस्सैल दिखते हो!

सुशील को उसकी बात सुनकर बहुत तेज गुस्सा आ गया। लेकिन वो बिना कुछ बोले वहां से चला गया। अगले दिन वह फिर वहां आया तो तोता फिर चीखा– ओ पत्रकार!

सुशील आंखे तरेरकर बोला– क्या है? तोता हंस कर बोला– तुम ना.. बहुत ही गुस्सैल हो। सुशील का दिमाग खराब हो गया। लेकिन वह फिर से इस अभद्र टिप्पणी पर बिना कुछ कहे चला गया। अब लगभग एक हफ्ते तक यही सिलसिला चलता रहता है। तोता उसको देखकर हर बार अपना वही रटा रटाया डायलॉग बोलता है। ओ पत्रकार, तुम बहुत ही गुस्सैल हो! फिर एक दिन सुशील का सब्र जवाब दे ही जाता है और जय कुमार से भिड़ जाता है। हर रोज जब मैं तुम्हारे पास आता हूँ, तो तुम्हारा ये तोता मेरा अपमान करता है। जय कुमार ने सुशील शुक्ला को वहीं बैठा कर सारी कहा और अपने तोते से कहा है– इन साहब को अच्छे से पहचान ले! अगर तूने आज के बाद कभी भी इनकी स्वभाव के खिलाफ कुछ भी बुरा बोल बोला, तो मैं तेरे पंख नोचकर तुझे बिल्ली के सामने डाल दूंगा। हम लोग इनको प्रेस क्लब का परशुराम कहते हैं और तू इनका मजाक बनाया है, समझा? तोता बहुत हैरान होता है, और जवाब देता है– हाँ, मैं समझ गया।

अगले दिन सुशील फिर वहां आता है। उसे देख कर तोता फिर से बोल पड़ता है–पत्रकार जी!

सुशील ने आग्नेय नेत्रों से उसको घूरा, और चीखा... अब क्या है?

तोता मुस्कुराया, और बोला– कुछ नहीं, मैं क्या बोलूं,तुमको पता तो है ही।

महावीर प्राविजन वाले नरेन्द्र जैन को बड़े विनम्र स्वर में फोन आया
हेल्लो, किराने वाले भैया, मैने सुना है कि आप, होम डिलिवरी करवा रहे हो।
सचमुच आप बड़ी सुविधा–सेवा कर रहे हो, आप महान हो।
नरेंद्र कोटड़िया बोला – जी हां, मैडमजी बताइए,क्या करूं सेवा।
हमारे यहां उपलब्ध है, हर तरह की मेवा।
महिला बोली –नहीं नहीं भाई साब,मेवे के
लड्डू तो मै बहुत खा चुकी हूं।
अब तो दर्द की लहर, शुरु हो चुकी है।।
लगता है जल्द ही नया मेहमान आने वाला है।
कृपा करके आप आ जाएं। या टीम भिजवा दें ।
अस्पताल जाना तो झंझट का काम होता है।
अच्छा होगा आप घर पर ही डिलिवरी करवा दें।
ऑर्डर सुनकर नरेंद्र को मानों 440 वोल्ट का झटका लगा।
उसकी दुकान के बाहर जो,बैनर था लटका, जिस पर लिखा था –यहां होम डिलीवरी की जाती है।
उसने उसको, उचक– उचक कर, फाड़ दिया।
तत्काल नया बैनर ,शुद्ध हिंदी में लिख कर टांग दिया।
यहां किराने की वस्तुएं, घर –घर पहुंचाई जाती हैं। होम डिलीवरी बिल्कुल नहीं की जाती है। कृपया होम डिलीवरी वाले, मुझे परेशान न करें। नर्सिंग होम या जिला अस्पताल से संपर्क करें..!!

एक दिन जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री संजय यादव सज धज कर किसी पार्टी में जा रहे थे.तभी उसने सर उठा कर आसमान की तरफ देखा तो ऐन उसी वक्त एक उडते हुए पक्षी ने बीट कर दी जो सीधे के मुंह में आकर पडी।
"अच्छा हुआ की मेरा मुंह खुला था" संजय यादव ने चैन की सांस लेता हुआ कहा– वर्ना नया कुर्ता खराब हो जाना था .

पार्षद विनय चोपड़ा एक फिल्म देखने रायपुर गये जब वे फिल्म देख रहे थे तब उसने देखा की बगल की सीट में एक बूढ़ी औरत भी फिल्म देख रही थी, फिल्म देखते समय वो हर दस मिनट बाद कोल्ड ड्रिंक की कैन में मुंह लगाती और फिर वापस रख देती!
उसे ऐसा करता देख पास बैठा विनय चोपड़ा परेशान हो गया। उसको नेतागिरी के कीड़ा ने काटा ।
उसे समाज सेवा करने की झक चढी.....
और उसने वह कैन उठाया और एक ही बार में उसे खाली कर दिया और उस बुढिया से बोला– ऐसे पी जाती है कोल्ड ड्रिंक दादी जी ! विनय की बात सुन बुढिया बोली – तरीका बात तो तुम सही बता रहे हो बेटा, मगर इसे बताने के चक्कर में तुमने जल्दीबाजी कर दी। दरअसल मैं तो उसमे अपना पान थूक रही थी !

मुंगेली नगर पालिका अध्यक्ष रोहित शुक्ला को उसके एकदम खासमखास खैरख्वाह ने सलाह दी कि आने–जाने के लिए एक घोडा खरीद लो। बात जंच गयी। एक बढिया हट्टा–कट्टा जवान घोडा उन्होंने खरीद लिया। एक बार घोड़े को कब्ज हो जाती है तो वह जानवरों के डॉक्टर के पास जाते है और उस से कहते है, डॉक्टर साहब मेरे घोड़े को बहुत ही बुरी तरह से कब्ज हो गयी है, जिस वजह से वह ठीक तरह से शौच भी नहीं जा पा रहा है। उनकी बात सुन कर डॉक्टर उसे एक गोली देता है और कहता है, यह लो यह पेट साफ करने की गोली है, तुम इसे पशुओं को दवाई देने वाली नली में रख कर इसका एक सिरा घोड़े के मुंह में डाल देना और दूसरी तरफ से फूंक मार देना ताकि गोली घोड़े के पेट में चली जाए, और कुछ देर बाद ही तुम देखोगे की घोड़े के शौच एकदम सामान्य हो जायेंगे और उसका पेट भी बिल्कुल साफ हो जाएगा। डॉक्टर की बात सुन दवा लेकर रोहित शुक्ला घर चले जाते है।

कुछ देर बाद जब डॉक्टर अपने चिकित्सालय में बैठा होता है तो बदहवास सा अपना पेट पकडे डॉक्टर के पास रोहित आते है जिसे देख कर डॉक्टर उनसे पूछता है।

डॉक्टर– अरे क्या हुआ आपकी हालत बड़ी ही खराब लग रही है?

रोहित– अरे डॉक्टर साहब क्या बताऊँ ये सब घोड़े को दवाई देने के चक्कर में हो गया।

.उसकी बात सुन डॉक्टर हैरान सा होकर पूछता है, वो कैसे?

रोहित– अरे डॉक्टर साहब आपने घोड़े को दवाई देने का जो तरीका बताया था, मैंने बिल्कुल वैसा ही किया बस किस्मत ही खराब थी की मेरे से पहले घोड़े ने फूँक मार दी।

शादी के एक स्वरूचि भोज में कवि साहित्यकार राकेश गुप्त घुस गये और आदतन पेलकर खाने लगे। लडकी पक्ष वाले एक सज्जन ने उनसे पूछा– माफ कीजिएगा....

आपको निमंत्रण दिया गया था

क्या....??

राकेश गुप्त जी का मूड खराब हो गया।

झल्लाकर बोले–

नहीं दिया तो.....

इसमें मेरी गलती है क्या.....????.

एक पापकार्न बेचने वाला शाम को अपना ठेला नया बस स्टैण्ड स्थित देव पुस्तक के सामने लगाता था। एक बार देव गोस्वामी ने ठेले वाले से पूछा तवे पे पडा पॉपकॉर्न उछलता क्यों है?

अब ऐसे अकलमंदी भरे प्रश्न का भला ठेले वाला क्या जवाब दे। वह चुपचाप सोचने लगा।

देव ने कहा–अरे भाई, ठीक से सोचो!

नहीं सोच पाए ना! अरे सोचने के लिए दिमाग की जरूरत होती है। देव ने मजाक किया।

इस पर ठेले वाले ने कहा– कि पापकार्न कैसे उछलता है, इसका सैद्धांतिक जवाब तो मेरे पास नहीं है। मगर यदि आप सही जवाब चाहते हो तो खुद बैठ के देख लो तवे पर। पता चल जायेगा!

अब बताइए कि इस लाजवाब का क्या जवाब देव के पास है?

एक दिन पहले सदर बाजार स्थित ओम पुस्तक भण्डार में ठलहा लोगों के इंतजार में ठलहा बैठे पूर्व पार्षद मोहन मल्लाह को याद आया कि उसे कान का चेकअप करवाने अपनी ही पार्टी वाले किसी डॉक्टर के यहां जाना है।

मोहन ने बताया कि उसे दाएं कान से कम सुनायी देता है। इस पर एक दोस्त ने कहा – और बायां कान...? मोहन ने बताया कि बांया कान से ठीक सुनाई देता है । तो दोस्त ने कहा ने कहा कि अड़हा डॉक्टरों के चक्कर में मत पड़ो वो तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं करेगें ? तुमको इलाज बताते है। तू अपना बांया कान दाहिने तरफ लगा लो तुम्हारी समस्या सुलझ जायेगी..

इतनी अक्कल भरी सलाह सुनकर मोहन डूब मरने के लिए खर्राघाट पुल में गया मगर नदी का पानी गंदा होने और पुल पर आवारा जानवरों की भीड़ बहुत होने पर 4 घंटा बाद बैरंग लौट आया....

नगर पालिका उपाध्यक्ष जयप्रकाश मिश्रा गुमशुम बैठे थे तभी उसके मित्र ने पूछा क्या हुआ..तो जयप्रकाश बोला ..क्या बताऊं यार, तेरी भाभी ने पूरी कालोनी में फजीहत करवा दी। कैसे..?

जयप्रकाश बोला – हम दोनों टॉकिज में टायलेट फिल्म देखने गये थे,। ट्रेफिक के कारण फिल्म में कुछ देर से पहुंचे ।तो इसमें नाक कटने वाली क्या बात हो गयी? जयप्रकाश अरे भाई, उसने वह पूरे कालोनी में कहती फिर रही है कि मैं और मेरे पतिदेव टायलेट गये थे, लेट हो गये तो शुरु की थोड़ी सी निकल गयी।

अब हम किस किसको समझाएं कि टायलेट नही, टायलेट एक प्रेमकथा फिल्म गये थे

भाजपा जिलाध्यक्ष दीनानाथ केशरवानी अति व्यस्तता के कारण सुबह–शाम का खाना समय बेसमय ही खा पाते है। इस पर भी उनकी पत्नि प्रतिदिन दीनानाथ की पसंद का खाना ही बनाती हैं। एक ऐसे ही एक अभूतपूर्व भोजन के पूर्व का आंखों देखा हाल प्रस्तुत है–

दीनानाथ एक रात 12 बजे विधायक मोहले के साथ दौरा करने के बाद घर पधारे । – भोजन करने बैठे और पुछा आज खाना क्या बना है ।

पत्नी – जो आप कहो वो बना देती हूँ।
दीनानाथ – दाल–चावल बना लो।
पत्नी – अभी कल ही तो खाये थे।
दीनानाथ – तो छोले–पूरी बना लो।
पत्नी – नहीं वो बहुत भारी खाना है।
दीनानाथ – अच्छा परांठे बना लो।
पत्नी – रात को परांठे कौन खाता है?
दीनानाथ – तो फिर इडली–सांभर बना लो।
पत्नी –उसमे तो बहुत टाइम लगेगा।
दीनानाथ – ठीक है मैग्गी ही बना लो।
पत्नी –पर उस से पेट नहीं भरेगा।
दीनानाथ – तो फिर क्या बनाओगी?
पत्नी –जो आप कहो!

टीवी पत्रकार रोहित कश्यप भाजपा कार्यालय के पास साफ–सफाई व गंदगी एवं बदहाली पर विडियो शूटिंग कर रहे थे। भूपू जिला भाजपा अध्यक्ष शैलेष पाठक को उसने बाइट देने को कहा। इसी बीच वहां पर रोहित को गोबर पडा हुआ दिखायी दिया । रोहित ने शैलेष को रोका कि आगे कदम मत रखो, पैर गंदे हो जायेंगे ! पर शैलेष पाठक किसी की बात को एक बार कहने पर मान जाए तो बात ही क्या! उसने कहा की मैं ये कैसे मान लूं की ये गोबर ही है, ये तो रास्ते में पडे इस पदार्थ के साथ अन्याय होगा !!

रोहित ने समझाया कि अपने सामान्य ज्ञान और पिछले अनुभव के आधार पर मैं ये निश्चित कह सकता हूँ कि ये गोबर ही है ! शैलेष नहीं माना और उसने पूरे विश्वास के साथ कहा कि वह चख कर ही ये तय करेगा की ये गोबर है या नहीं !

खैर जब अच्छी तरह से चखकर शैलेष को पूरा विश्वास हो गया की हाँ ये गोबर ही है, तब उसने रोहित से कहा,

वो तो अच्छा हुआ चख लिया वर्ना पैर गंदे हो जाते !!

पूर्व विधायक चंद्रभान बारमते को दस्त लग गए। वह डॉक्टर के पास गये उन्होंने कुछ दवाइयां लिख दीं।

बारमते ने पूछा– दवाइयों के साथ–साथ कोई सावधानी तो नहीं बरतना है।

डॉक्टर ने कहा कि अभी एकाध सप्ताह तक सुबह का नाश्ता जल्दी कर लेना मगर वह हल्का–फुल्का ही करना। इस पर बारमते ने बताया कि वह नाश्ता जल्दी नहीं कर सकता क्योंकि उसे सुबह पूजा–पाठ में देरी लगती है।

डॉ0 ने पूछा –पूजा में तुम शंख भी बजाते हो या नहीं ? इस पर बारमते ने सगर्व बताया कि वह काफी देर तक शंख बजा लेता है।

डॉ. ने कहा कि वह तो ठीक है,, मगर अभी कुछ दिन तक शंख जोर से मत बजाना वरना.....!

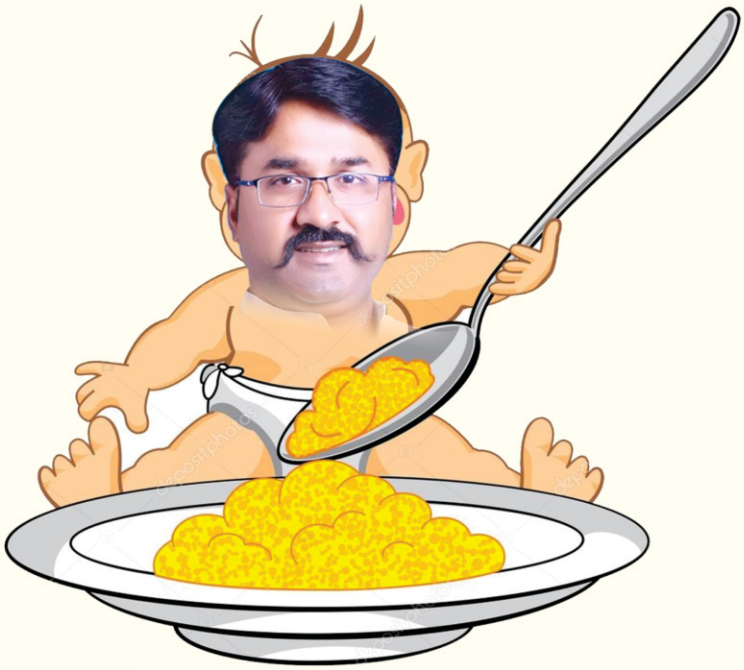

कांग्रेस नेता अभिलाष सिंह भोजन करने के लिए बैठे। भोजन करते हुए अचानक बीच में उनकी पत्नी ने कुछ कहना चाहा।

पत्नी– सुनिये, आपकी दा...

अभिलाष सिंह चुप रहो, कितनी बार कहा है कि खाना खाते वक्त बीच में मत बोला करो. (खाना खाने के बाद)...

अभिलाष सिंह – हां अब बोलो क्या कह रही थी?

पत्नी – मैं तो केवल इतना कह रही थी कि आपकी दाल में मक्खी गिर गई है। मगर आपने बोलने ही नहीं दिया।

पुनीत रेस्टोरेंट के संचालक प्रवीण वैष्णव रोज शाम को वो घूमने जाते है एक रात पंडरिया रोड में जब वो लौट रहे थे तो तेज आंधी तूफान में फंस गये भागते–भागते रास्ते सड़क किनारे में एक पेड मिला वैष्णव पेड से लिपट गया । थोडी देर में जब तूफान शांत हो गये तो वैष्णव ने पसीना पोछते हुए कहा–आज अगर मैं पेड को नहीं पकडा होता तो पेड हवा में उड जाता ।

मोहन भोजवानी अपने पुत्र राजेश के संग मुंगेली के प्रसिद्ध राजेंद्र बुक स्टाल में बंदर का एक चित्र खरीदने गये। वहां पर दीवार में टंगा एक फोटो उसको पसंद आया। उन्होंने दुकान संचालक धर्मेन्द्र देवांगन से पूछा– ये बंदर का फोटो कितने का है? धर्मेन्द ने फोटो की ओर देखा और कोई जवाब नहीं दिया। भोजवानी ने दुबारा पूछा– ये फोटो कितने का है?

इस पर उनके पुत्र राजेश ने अपने पापा के कान में धीरे से कहां पापाजी, ये बंदर का फोटो नहीं, आईना है। जिसके सामने आप खड़े हैं।

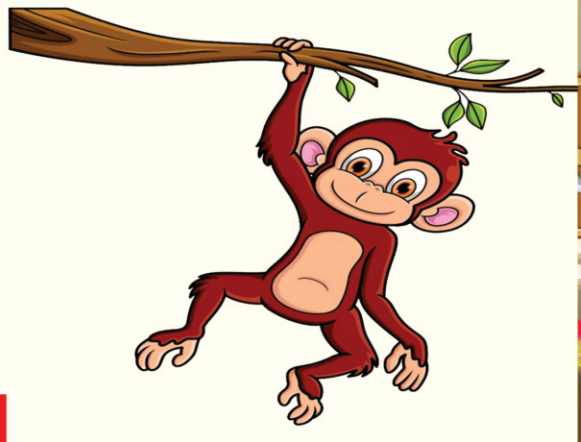

संतूलाल सोनकर जिला चिकित्सालय में डाक्टर के पास पहुंचे-
डॉक्टर साहब, मुझे तो आप पहचानते हैं।
डॉ. - हां भई, आपको न पहचानूं ऐसी मेरी मजाल कहां? आप तो पिछले बार जब नगर पालिका अध्यक्ष का चुनाव जीते थे उस समय अपने निमोनिया का इलाज करवाने मेरे पास आए थे।
सोनकर- जी हां, उसी के बारे में कुछ पूछना है।
डॉ. - पूछिए, क्या पूछना है?
सोनकर-जी, आपने तब कहा था कि कुछ दिन नहाना मत।
डॉ. - हां, कहा था। लेकिन साल भर बाद अब आप पूछना क्या चाहते हैं?
सोनकर-जी, मैं पूछना चाहता हूं कि क्या मैं अब नहा सकता हूं?

एक भिखारी स्वतंत्र तिवारी के घर में भीख मांगने गया। तिवारी ने दरवाजा खोला...
भिखारी– भगवान के नाम पर कुछ दे दे बाबा। तिवारी–मैं बाबा नहीं युवक हूं।
भिखारी–भगवान के नाम पर कुछ दे दे बेटा। तिवारी–मैं आपका बेटा नहीं।
भिखारी–भगवान के नाम पर कुछ दे दे स्वतंत्र बेटा।
तिवारी– मेरा पूरा नाम है स्वतंत्र तिवारी
भिखारी– भगवान के नाम पर कुछ दे दे
तिवारी– यह हुई न बात! आगे बढ़ो बाबा, घर पर श्रीमती जी नहीं है।

जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष घनश्याम वर्मा के पास दिल्ली से राहुल गांधी के कार्यालय का फोन आया वे तत्काल दिल्ली पहुंचे । वर्मा जी तत्काल अतिद्रुतगामी ट्रेन से दिल्ली के लिये रवाना हुये उन्होने अखबार में इस अतिद्रुतगामी ट्रेन के बारे में काफी पढ़ा था कि इसमें बेहतरीन सुविधाएं है। खैर वे रवाना हुए। इसी ट्रेन में एक महिला अपने चार साल के बच्चे के साथ दिल्ली जा रही थी।

इस बीच उस बच्चे को छि...छि... लगी। उसकी मां ने उसे टायलेट ले गयी बिठाकर और दरवाजे के बाहर से पूछी कि तुमको कितनी देर लगेगी.... बच्चे ने कहा कि 5 मिनट लगेंगे। ठीक है तुम आराम से निपटो, मैं आती हूं यह कहकर बच्चे की मां चली गयी। मगर हुआ कुछ ऐसा कि बच्चा छि....छि.... के काम से दो मिनट में ही निपट गया और साफ–सफाई करके, पैंट पहनकर अपने बर्थ के पास आ गया।

इसी बीच वर्मा को भी छि.....छि.....लगी। वह भी उसी टायलेट में घुस गया। वर्मा टायलेट के अंदर की साज–सज्जा,साफ–सफाई को निहारते आराम से निपट रहा था कि उस बच्चे की मम्मी ने दरवाजे के बाहर से आवाज दी– निपट लिया न, अब बाहर निकल । इस आवाज को सुनकर वर्मा के समझ में कुछ नहीं आया। इतने में बच्चे की मम्मी ने फिर कहा– अरे

निपट गया हो तो अब धुलाने और पेंट पहनाने आउं क्या.....बात को समझकर वर्मा को मजा आ गया, कांग्रेस से अपने जुडाव पर उसे गर्व हुआ।

पार्टी लाईन से सोचते हुए घनश्याम वर्मा ने कहा–वाह इस ट्रेन की इस विशेष सुविधा पर उन्हे बड़ा आनंद आया की ऐसी भी सुविधा है....गजब है भाई, सच में मोदी है तो मुमकिन है।

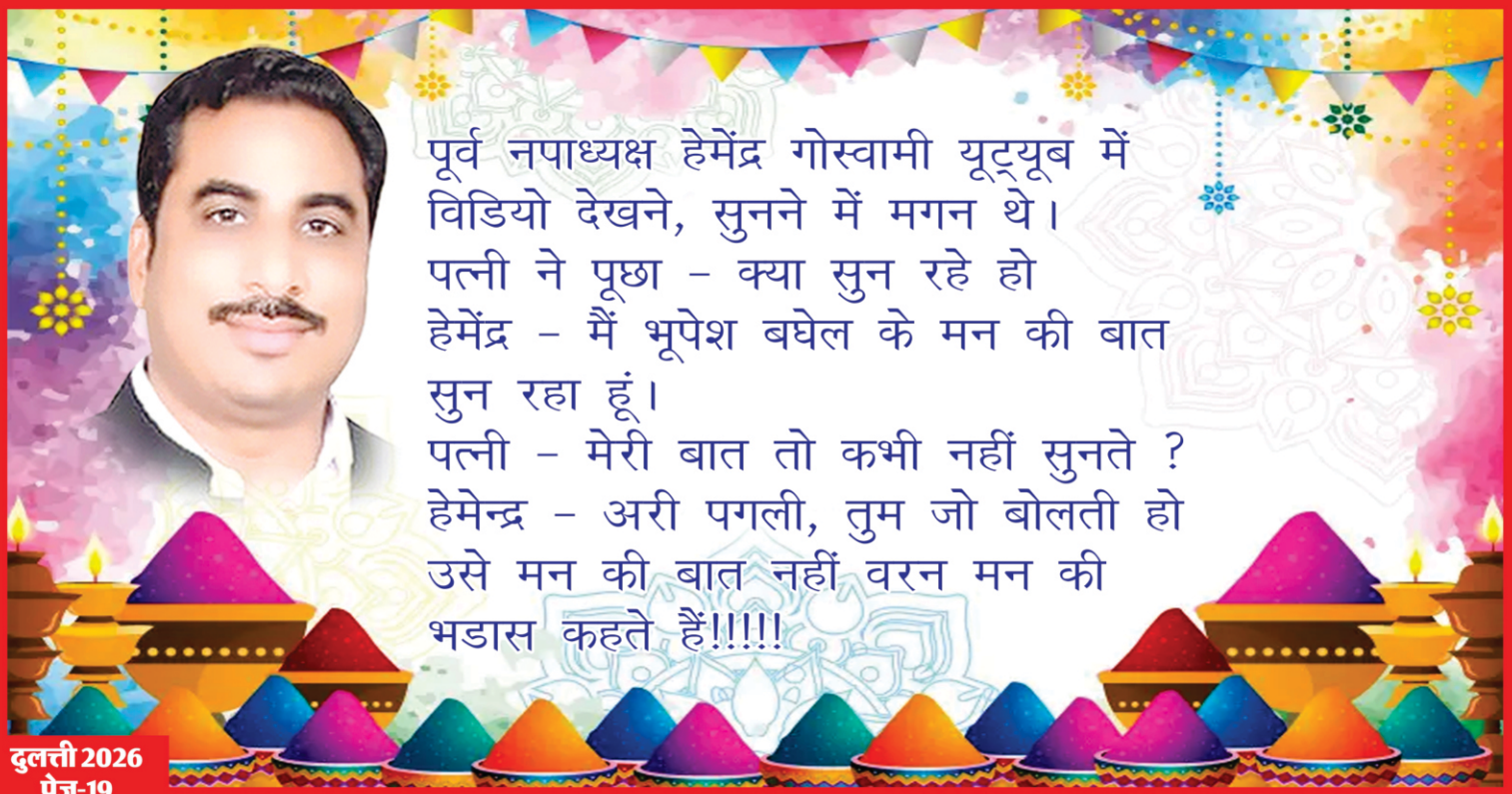

पूर्व नपाध्यक्ष हेमेंद्र गोस्वामी यूट्यूब में विडियो देखने, सुनने में मगन थे।
पत्नी ने पूछा – क्या सुन रहे हो
हेमेंद्र – मैं भूपेश बघेल के मन की बात सुन रहा हूं।
पत्नी – मेरी बात तो कभी नहीं सुनते ?
हेमेन्द्र – अरी पगली, तुम जो बोलती हो उसे मन की बात नहीं वरन मन की भडास कहते हैं!!!!!

भाजपा के जिला महामंत्री राणाप्रताप सिंह ने स्कूल से मिली अपने बेटे के रिपोर्ट कार्ड पर अंगूठा लगाया।
बेटा – पापा, आप तो पढे–लिखे हो, फिर ये अंगूठा क्यों...?
राणा– हरामखोर तेरे मार्क्स देखकर टीचर को नहीं लगना चाहिए कि तेरा बाप पढा–लिखा है।

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष स्वतंत्र मिश्रा एक शाम अपनी गाड़ी में कहीं जा रहे थे कि पड़ाव चौक में ट्रेफिक पुलिस ने उसको रूकने का संकेत दिया। मिश्रा के पास उस समय न तो गाड़ी के कोई कागजात थे न ही ड्रायविंग लाइसेंस । अगर पुलिस वाले ने सब कागजात मांगे तो बड़ी गड़बड़ हो जावेगी। खैर, तत्काल उसकी कूटनीति वाली बुद्धि जागृत हो गई और उसने उपाय सोच लिया।

बाईक के पास पहुंचकर पुलिस वाले ने नोटबुक निकालते हुए पूछा। क्या नाम है तुम्हारा? पाण्डेय ने बताया– एटु एट्टडेंदुकु मीरू वेल्लितिरि पोंडैया डिमैकलु जान्नतुलमरू.....

सिपाही समझ गया कि भाई साहब मूड में है। उसने चुपचाप नोटबुक जेब में रखा और कहा– भाई साहब, आइंदा गाड़ी ठीक–ठाक हालत में चलाया करें। कम से कम अपना नाम तो ठीक से बताने की स्थिति में

एक बार मुंगेली के प्रसिद्ध फर्नीचर व्यापारी धनेश सोलंकी किसी ट्रेड फेयर के सिलसिले में मुंबई पहुँचे। दिनभर की मीटिंग्स के बाद शाम को उन्होंने सोचा "थोड़ा रिलैक्स किया जाए।" तो वो पास के एक फाइव स्टार होटल के रेस्टोबार में पहुँच गए।

चेहरे पर थकान और हाथ में मेन्यू। बार के कोने में एक टेबल पर वो धीरे–धीरे पसंद के पेय की चुस्की ले ही रहे थे कि अचानक सामने से एक अमेरिकन महिला आ गोरी त्वचा, नीली आँखें, और मुस्कान में आत्मविश्वास। वो कुछ बोली, पर अमेरिकन स्टाइल में कहीं गयी अंग्रेजी में "गुड मॉर्निंग" से आगे धनेश जी को कुछ समझ नहीं आया।

उन्होंने मुस्कुरा कर कुर्सी की तरफ इशारा किया सिट... सिट... प्लीज!" महिला बैठ गई।

धनेश जी ने बातचीत की कोशिश की, लेकिन दोनों के शब्द एक–दूसरे के लिए पहेली बन चुके थे। आखिर तंग आकर धनेश जी ने नैपकिन पर गिलास का चित्र बना दिया और उसे दिखाया। महिला मुस्कुराई, बोली यस । धनेश जी ने वेटर को बुलाकर दो ड्रिंक का ऑर्डर दे दिया।

कुछ देर बाद, उन्होंने फिर नैपकिन उठाई और इस बार प्लेट में पराठा और सब्जी का स्केच बनाया। महिला ने फिर से सिर हिलाया वेल! दोनों ने साथ में खाना खाया, हँसे, मुस्कुराए, इशारों में बातें हुईं। खाना खत्म होने पर, अब महिला ने वही नैपकिन उठाई और उस पर एक बिस्तर का चित्र बना दिया। फिर उसने आँखों से मुस्कराते हुए मुकेश जी को दिखाया।

मुकेश जी का चेहरा लाल। उन्होंने तुरंत वेटर को बुलाया, बिल भरा और बाहर निकल आए।

अब पंद्रह–बीस साल बीत चुके हैं आज तक धनेश जी जब भी अपने पुराने दोस्तों से मिलते हैं, वही किस्सा सुना देते हैं और हंसते हुए कहते हैं अरे भाई, आज तक समझ नहीं पाया कि वो अमेरिकन महिला कैसे जान गई कि मैं फर्नीचर का व्यापारी हूँ!

पूर्व पार्षद एवं कांग्रेस नेता संजय जायसवाल ने फायर स्टेशन पर फोन किया ।
आग लग गयी । संजय चिल्लाया – जल्दी आओ ।
कहां आयें ? – पूछा गया ।
मेरे घर आओ, जहां आग लगी है, और कहां आवोगें ?
अरे सर, घर कहां है आपका ?
तुम्हारे इलाके में ही है।
ओफ्फोह ! अरे, वहां पहुंचें कैसे हम ?
"पहुंचें कैसे ? क्या मतलब इसका ? वो जो लाल–लाल गाड़ी सारे शहर में भगाये फिरते हो, उस पर पहुंचो और कैसे पहुंचोगें ।

किसान कांग्रेस के प्रदेश महासचिव आत्मा सिंह क्षत्रिय रात को घर लौटे तो रास्ता भूल गया और गलती से एक अनजानी गली में घुस गया वहां एकाएक एक कुत्ता उस पर भौंकने लगा और झपटने की तैयारी करने लगा आत्मा सिंह ने उसे मारने के लिए जमीन से एक पत्थर उठाने की कोशिश की लेकिन संयोगवश वह पत्थर जमीन में गड़ा हुआ था और कुत्ता था कि भौंके जा रहा था और किसी भी क्षण उस पर झपट सकता था अजीब मोहल्ला है, यारो । – आत्मा सिंह वितृष्णापूर्ण स्वर में बोला – कमाल है, इस गली में रहने वालों ने कुत्ते को खुले छोड़ दिया हैं और पत्थर बांधकर रखे हुए हैं

मुंगेली के असरदार सरदार वकील रविन्दर सिंह छाबड़ा को घर के सामने वाली गली में रात को 9 बजे 500 रुपये का नोट पड़ा मिला..
जिस पर लिखा था––कैसे हो यार.....
खुश होकर रविन्दर ने अपनी जेब से
2000 रुपये का नोट निकाला..और उस पर ––
बढिया हूं, तू बता कैसा है...?
लिख कर वहीं पर छोड़ दिया...

पार्षद अरविंद वैष्णव की घरेलू दुर्दशा क्या है, इसे जानिये– एक दिन उनकी पत्नी ने बहुत ही सुरीले और मादक अंदाज में बाथरूम से आवाज दी,

डार्लिंग, मैं बाथरूम में हूँ... मैंने साबुन लगा लिया है...प्लीज,जरा आओ ....और अपने मजबूत हाथों से अच्छी तरह से रगड़ दो .... ????

अरविंद जो चाय की चुस्की लेता हुआ अखबार पढ़ रहा था...

हां जानेमन, तुम्हारा हुकुम मेरे सर माथे, आया...और कूदता हुआ बाथरूम में पहुंचता है...

तो देखता है कि पत्नी कपड़ों के ढेर के आगे खड़ी हुई थी...

पत्नी– देखो, मैंने कपड़ों में साबुन लगा दिया है...अब अच्छी तरह से हर कपडे को ब्रश से रगड़ना और धोना, फिर निचोड़ कर उन्हें बाहर तार पर सूखने डाल देना....मुझे घर के और रसोई के और भी काम निपटाने हैं. ??????

चेम्बर ऑफ कॉमर्स वाले राजकुमार वाधवा
बैठे हुए बडबडा रहे थे।
साले अंग्रेजों ने हर काम के लिए
डे फिक्स करके
हमारी ऐसी की तैसी करके रख दी है।
मदर्स डे,
फादर्स डे,
रोज जाते हैं मगर हग डे,
एक बनाये हैं, किस डे,
भाड में गया
किस डे.....
जब पत्नी कहती है...
किस दो...
तो.....
रूह कांप जाती है. 5 किलो गाजर किसना आसान है क्या ?
मैंने तो गाजर का हलवा खाना ही बंद कर दिया.

नव पदस्थ नगर कांग्रेस अध्यक्ष दीपक गुप्ता और जीत्तू श्रीवास्तव टरकाने में माहिर ।
एक रात दीपक ने जीत्तू से कहा– जरा देख, बाहर बारिश हो रही है क्या।
जीत्तू बोला– बारिश हो रही है।
दीपक– देखे बगैर कैसे कहता है।
जीत्तू बोला– गुरुजी अभी–अभी जो बिल्ली अंदर आई है, वह भीगी हुई है, तो इसका मतलब बारिश हो रही है। पक्की बात है।
पांच मिनट बाद दीपक ने फिर कहा– अच्छा जरा बत्ती बुझा दे।
जीत्तू बोला– आंखे बंद कर लो, अपने आप अंधेरा हो जाएगा।
दीपक ने झल्लाते हुए कहा– चल जरा उठकर दरवाजा तो बंद कर दे।
जीत्तू बोला– अब दो काम मैंने कर दिए। तीसरा तो आप कर लो।

वैष्णव मिष्ठान्न भंडार में भाजपा नेता मिथिलेश केशरवानी चाय पीने गया। चाय पीकर बाहर आया तो देखा कि उसकी बाईक गायब। इधर खोजा, उधर खोजा, उपर खोजा, नीचे खोजा, दायें खोजा, बांये खोजा, सब ओर खोजा। मगर बाईक नहीं मिली। भन्नाते हुए मिथिलेश वापस होटल में आया और कहर ढाती हुई आवाज में बोला- कोई साला, बाहर से मेरी बाईक चुरा कर ले गया है। मैं उसको खबरदार करता हूं कि अगर मेरे दो समोसा खतम करते तक मेरी बाईक वापस नहीं आई तो मैं वैसा ही करूंगा जैसा कि मैंने पिछले साल मिश्रा मिष्ठान्न भंडार में किया था। तब मेरे से मत कहना कि मैंने ऐसा क्यूं किया।

धमकी कारगर साबित हुई।
उसके एक समोसा गटकने के पहले ही
उसकी बाईक बाहर पार्किंग पर आ गई।
एक व्यक्ति ने धीरे से पूछा
भैया, मिश्रा होटल में आपने क्या किया था ?
अबे, करना क्या था, पैदल घर तक गया था।

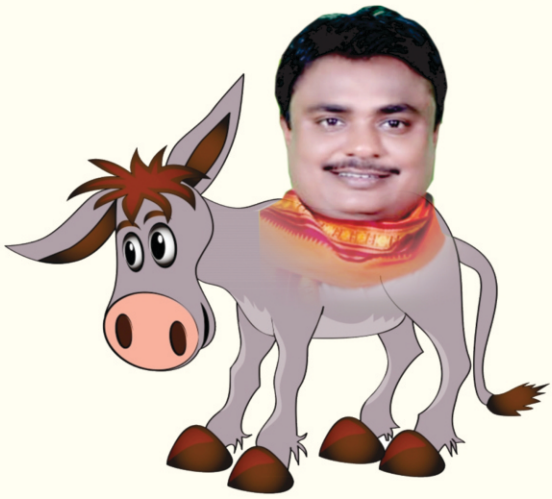

भाजपा नेता और पूर्व जनपद अध्यक्ष जयपाल साहू अपने घर की लाइट ठीक कर रहा था...
उसने अपनी पत्नी को आवाज लगाईं.
जयपाल– सुनती हो !
पत्नी– क्या है ?
जयपाल– जरा इधर तो आओ।
पत्नी– लो आ गई, अब बोलो ?
जयपाल– ये दो तार हैं, जरा इनमे से कोई एक हाथ में पकड़ना।
पत्नी– क्यों ?
जयपाल – अरे तू पकड़ तो सही एक बार।
पत्नी– ये लो पकड़ लिया ।
जयपाल–कुछ हुआ ?
पत्नी – नहीं तो ।
जयपाल– अच्छा , इसका मतलब करंट पहले तार में नहीं वरन दूसरी तार में है ।

दुलत्ती के सहयोगी संपादक अक्षय लहरे और उसकी पत्नी एक बर्तन की दुकान में झगड़ रहे थे ।

पत्नी–ये वाला स्टील का गिलास लो ।

अक्षय–नहीं जरा और बड़ा गिलास लेंगे ।

दुकानदार–साहब जी, महिलाओं का जमाना है, मैडम जो कह रही है ।वही गिलास ले लीजिए

अक्षय–अरे भईया तुम्हे बड़ी गिलास बेचने की पड़ी है लेकिन इस छोटे से गिलास में मेरा हाथ घुसेगा नहीं मांजना तो मुझे रोज–रोज मुझे ही पड़ेगा ।

भाजपा नेता अमितेष (विज्जु) आर्य इन दिनो बहुत परेशान है हर रोज सुबह उसके पास एक कोकिल कंठी युवती इलू-इलू कहती है । वह कुछ पूछ पाता फोन बंद हो जाता । इसी नम्बर पर वो फोन लगाता तो कोई जवाब नही मिलता । विज्जू बहुत परेशान हलाकान हो गया की कहीं अलकरहा टाईम में घण्टी बजी और परिवार के किसी सदस्य ने फोन उठा लिया तो क्या होगा ?

अंत में झल्लाकर विज्जू ने अपना कटवा लिया - फोन

होली, नवरात्रि, रामनवमी की हार्दिक बधाई..

RK PALACE

FAMILY HOTEL

ROOMS AVAILABLE

Pandariya Road, Mungeli (C.G.)

Pravin Vaishnava :- 9179411967

- शादी पार्टी के लिए मैरिज लॉन की सुविधा
- रुकने ठहरने की उत्तम व्यवस्था
- बर्थ-डे, शादी एवं अन्य कार्यक्रमों के लिए लॉन/हॉल उपलब्ध
- केटरिंग की सुविधा उपलब्ध

Holi Hai

होलिकोत्सव: महामूर्ख

नवभारत- 9. 3. [illegible]

सम्मेलन व अन्य कार्यक्रम आयोंजित

मुंगेली. पत्रकार संघ मुंगेली द्वारा आयोजित महामूर्ख सम्मेलन में 'श्रीमान महामूर्ख को ३२ वर्गफुट बारदाने की टाटपट्टी पर लिखा अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया तथा मौर- मुकुट पहनाकर उनका अभिनंदन किया गया।

प्रति वर्ष मनाये जाने वाले इस कार्यक्रम के प्रारंभ में मूर्खों में सदैव अग्रणी श्री बी.एम. मिश्रा (प्राचार्य एस.एन.जी. कालेज) ने गर्दभराज के चित्र पर टीका लगा कर अगरबत्तियों से पूजा की और कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। पत्रकार संघ के सदस्यों द्वारा मंच पर विराजमान मूर्खों को स्वागत मुकुट पहनाकर बेसरम की टहनियों का गुलदस्ता भेंट किया गया। जन समुदाय उस समय हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया. जब गर्दभराज की अनुपस्थिति में उनका भोजन (घास व पैरा) मंच पर आसीन मूर्खों के समक्ष खाने हेतु रखा.गया।

कार्यक्रम में नगर के महामूर्खों श्री निरंजन प्रसाद केशरवानी, श्री के.एल. जायसवाल, श्री हफीज मोहम्मद, श्री गणेश बाजपेयी, श्री बी.एम. मिश्रा श्री जीत उप्पल, श्री शिवकुमार उर्फ राजेंद्रनाथ गुरुजी, डा. संजय अग्रवाल, श्री मिश्रा (खाद्य निरीक्षक), श्री शर्मा (एस.डी.ओ. लो.नि.वि.) के साथ इनकी मूर्खताओं के बारे में जनता को विस्तार से बताने वाले लतीफे बाज श्री मनोहर महोबिया, श्री धनेश सोलंकी, मनोज अग्रवाल, गिरीश शुक्ल, निर्मल माणिक के मध्य हुई मजेदार नोंक-झोंक से लोगों ने भरपूर आनंद उठाया। पत्रकार संघ के अध्यक्ष श्री महेन्द्र अग्रवाल ने १८ हजार रु. के वापसी कांड की अंदरुनी कहानी को रोचक ढंग से पेश किया।

• किसी भी मूर्ख को बुलाकर उनसे एक चिट निकलवाई जाती है और उस चिट में जो भी लिखा होता है, मंच पर उसे करके दिखाना होता है। इस मजेदार कार्यक्रम में लोगों का भरपूर मनोरंजन हुआ। पहली चिट निकालकर ही श्री हफीज मोहम्मद पशोपेश में पड़ गये, क्योंकि उनकी चिट का विषय था- 'आप अपनी पत्नी के पति हैं- यह सिद्ध कीजिए? अंट- शंट तर्क देकर उन्होंने इसकी कोशिश तो की, मगर सिद्ध करने में वे असफल रहे। श्री के.एल. जायसवाल को नगर की चर्चित ढेलाबाई के बारे में पांच मिनट बोलने की चिट निकली। हालांकि जायसवाल ने साफ झूठ बोलकर कि- 'मैं ढेला बाई के बारे में कुछ नहीं जानता, इसके बारे में श्री निरंजन केशरवानी बेहतर जानेंगे, कन्नी काटने की कोशिश की, मगर केशरवानीजी ने उनकी दाल नहीं गलने दी।

शिवकुमार उर्फ राजेन्द्रनाथ गुरुजी को एकदम सटीक चिट मिली। उनकी चिट में लिखा था- 'आप अपनी जवानी के किसी एक कुकर्म का वर्णन करें। सारा माहौल ठहाकों से गूंज उठा, जब इन्होंने जवाब दिया कि- 'एक कुकर्म की क्या कहूं, मेरी तो सारी जवानी कुकर्म करते बीती है।' नगर के सबसे अधिक मुंह चलाने वाले श्री जीत कुमार उप्पल को मनोवांछित चिट मिली, जिसमें लिखा था- २५ ऐसी गालियां सुनाइए, जो अश्लील न हो, मगर यह कहकर इन्होंने इस विषय का बायकाट कर दिया कि मुझे सिर्फ अश्लील गालियां ही आती हैं। श्री शर्मा एस.डी.ओ. को 'शराब पीने के फायदे' विषय पर ५ मिनट बोलना था, मगर अपनी मंद अक्ली का सबूत देते हुए ये साबित करने पर तुल गये कि पानी में शराब से अधिक नशा है। श्री निरंजन केशरवानी को किसी भी होली गीत की दो लाइनें गाने का विषय निकला। इस पर उन्होंने कहा कि जवानी तो मैंने गीत सुन सुनकर गुजार दी पर मैंने गीत गाना नहीं सीखा। इन्होंने इस सम्मेलन के आयोजकों के बारेमें किस्से सुनाकर होली की तरंग का परिचय दिया। डा. संजय अग्रवाल को 'पौने आठ' विषय पर ५ मिनट बोलने का विषय मिला। गणेश बाजेपयी को उनके मिजाज के अनुरुप चिट मिली, जिसमें विषय था- वेश्या के कोठे पर रंगे हाथ पकड़े जाने पर आप पुलिस के सामने कैसे गिड़गिड़ायेंगे। इस विषय को दर किनार रख उन्होंने जिस ढंग से चुटकुला बताया, वह गिड़गिड़ाने का ही अंदाज था।

कार्यक्रम को सफल बनाने केलिए श्री विकास गुप्ता, श्री चंद आरतानी, कोटड़िया टेंट हाऊस एवं कपूर चंद ने विशेष सहयोग दिया। कार्यक्रम के अंत में मनोज अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'दुलत्ती ८८' का वितरण किया गया।

Happy Holi